आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : बारहवां अंक : छठा अक्टूबर-2014

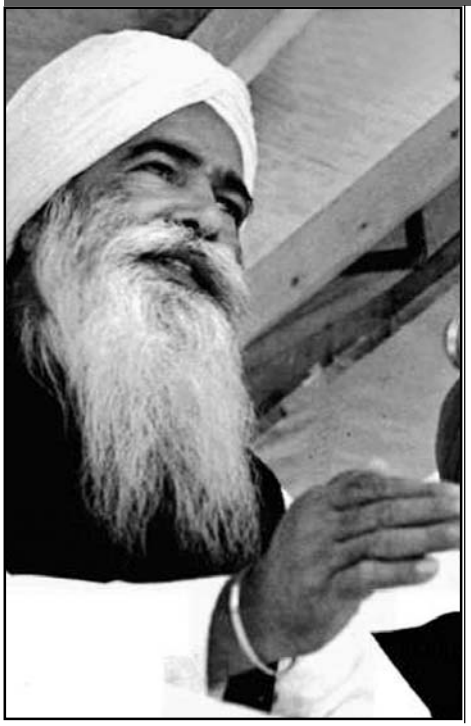

4

(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले)

अमृतवेला

5

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी

मुसाफिर

(स्वामी जी महाराज की बानी) मुम्बई

25

परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविन्द से

अनमोल वचन

संपादक	उप संपादक	विशेष सलाहकार	सहयोगी
प्रेम प्रकाश छाबड़ा 099 50 55 66 71 (राजस्थान) 098 71 50 19 99 (दिल्ली)	नन्दनी	गुरमेल सिंह नौरिया 099 28 92 53 04 096 67 23 33 04	परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 सितम्बर 2014 -151- मूल्य – पाँच रुपये

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

अमृतवेला

तू मेरा पिता, तू है मेरा माता, तू मेरा बंधप, तू मेरा भ्राता, (2)
तू मेरा राखा सबनी थांईं, तां भौ केहा काड़ा जिओ,
तू मेरा पिता .....

1. तुमरी कृपा ते तुध पछाना, तूं मेरी ओट तूं है मेरा माना, (2)
तुध बिन दूजा अवर ना कोई, सब तेरा खेल अखाड़ा जिओ,
तू मेरा पिता .....

2. जीया जंत सब तुध अपाऐ, जित–जित भाणा तित्त–तित्त लाऐ, (2)
सब किछ कीता तेरा होवै, नाहीं किछ असाड़ा जीओ,
तू मेरा पिता .....

3. नाम ध्याये महासुख पाया, हर गुण गाऐ मेरा मन सितलावा, (2)
गुरु पूरे बजी वधाई, 'नानक' जीता बिखाड़ा जिओ,
तू मेरा पिता .....

हाँ भई! परमात्मा की अपार कृपा से हम रोजाना मन को जवाब देकर अभ्यास पर बैठ रहे हैं। हमने मन की बात नहीं माननी, मन को जवाब देकर अभ्यास पर बैठना है। जिस तरह समुद्री जहाज पर बहुत सारे कौवे होते हैं चाहे वे जितनी मर्जी लंबी उड़ान भर लें जब भी बैठेंगे जहाज के ऊपर ही आकर बैठेंगे।

यही हालत हमारे मन की है, मन के पीछे न जाएं। ये चाहे जहाँ भी दौड़ता रहे आप तीसरे तिल पर एकाग्र हों मन को शान्त करें, शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास के लिए चाहे अपने घर में बैठें, चाहे जहाँ भी बैठें अपने ख्याल को तीसरे तिल पर केन्द्रित करें। आँखें बंद करके अपना अभ्यास करें। ***

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मुसाफिर

स्वामी जी महाराज की बानी

मुम्बई

हमारे आगे दो ही रास्ते हैं एक गुरुमत और दूसरा मनमत है। इंसानी जामें में हमें आजादी है चाहे हम गुरुमत पर चलें चाहे मनमत पर चलें। मनमत पर चलकर हम अपना जीवन बर्बाद कर लेते हैं। सन्त हमें सतसंग में मनमत की त्रुटियां और गुरुमत के फायदे समझाते हैं कि परमात्मा ने हमें इंसानी जामा क्यों दिया?

परमात्मा ने चौरासी लाख योनियां पैदा की, हर एक को अपने-अपने कर्मों के अनुसार जन्म दिया। हमें हर योनि में बाल-बच्चे मिलते आए, हम दुख-सुख भोगते आए और गर्मी-सर्दी महसूस करते आए। इंसान के जामें को सारी योनियों का सरदार बनाकर भेजा। हमें पता है आदमी जितना ज्यादा बड़ा होगा उसकी उतनी ही ज्यादा जिम्मेवारियां होंगी, बड़े सिरों की बड़ी दर्द होती है।

परमात्मा की भक्ति, परमात्मा के साथ मिलाप हम सिर्फ इंसानी जामें में ही कर सकते हैं अगर हमने इंसानी जामें के मौके को हाथ से गँवा दिया तो पता नहीं कहाँ जाकर जन्म हो जाए! हम भूले-भटके भी परमात्मा की तरफ न आ सकें। हमें जो वक्त मिला है महात्मा उससे पूरा फायदा उठाने की बात बताते हैं।

इंसानी जामा अमृत का चश्मा है। परमात्मा ने इसके अंदर भरपूर अमृत रखा हुआ है। हमारा दुश्मन, मित्र, हमदर्द भी इसके अंदर बैठा है। हम अपने-अपने तरीके के मुताबिक कहते हैं कि हम गुरुमत पर चलते हैं। मैं आगे चलकर आपको सतसंगों में खोलकर बताऊंगा कि गुरुमत कहाँ से शुरू होती है लेकिन हम किस तरह मनमत को गुरुमत समझे बैठे हैं?

महात्मा हमें बताते हैं कि मनमत उसे कहते हैं जो मन में आया वह किया, शराब-कबाब खाया पिया और विषय-विकार भोगे। आज के युग में तो हम देखते हैं कि हम सारा दिन बुरे लिटरेचर पढ़ते हैं सिनेमा देखते हैं, हमारा मन नहीं टिकता और नाम जपने के समय कहते हैं कि हमारे पास समय है ही नहीं।

किसी दिन भूल से 'शब्द-नाम' की कमाई करने बैठ जाएं तो सतगुरु को पत्र भेजते हैं कि महाराज जी! मैंने कल भजन किया था तरक्की नहीं देखी। आप सिनेमा में कितने-कितने घंटे बैठते हैं आपकी आँखो पर उस रोशनी का असर होता है। यह मनमत है मन आपको फँसाने के लिए ऐसा करता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मन काल का एजेंट है, अपने मालिक का हुक्म बहुत आसानी से बजाता है; यह कभी भी अपने मालिक का नमक हराम नहीं बनता। जब मन अपनी

ड्यूटी से नहीं हटता तो हमारा भी फर्ज बनता है कि हम भी अपने परमात्मा गुरु का हुक्म मानें उसका काम करें।''

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''जब बुरा बुराई से नहीं हटता तो भला भलाई से क्यों हटे। जब मन हमें बुरी तरफ प्रेरित करने से नहीं हटता तो हमारा भी धर्म बनता है कि हम मन की बात न मानें और ऐसे लोगों की संगत में जाएं जिन्होंने जिंदगी में इस मसले को हल किया हुआ है।''

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''परमात्मा ने तेरे अंदर बहुत सारा अमृत रखा हुआ है लेकिन वह अमृत आत्मा को पीने के लिए नहीं मिल रहा। उस अमृत को काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पी रहे हैं क्योंकि हमारा बर्तन उल्टा रखा हुआ है इसलिए इसके अंदर अमृत का कतरा भी नहीं जा रहा। हम जानते हैं अगर बर्तन उल्टा रखा हो तो चाहे सारा साल ही बारिश होती रहे इसके अंदर पानी का एक कतरा भी नहीं जाएगा अगर हम इस बर्तन को सीधा कर दें तो एक नहीं तो दूसरी बारिश से यह बर्तन भर जाएगा।'' गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

ऊन्दे भांडे कछु न समावे, सीधे पवे अमृत धार।

हमने अपने हृदय कमल को सीधा करना है। नाम की चढ़ाई ऊपर की तरफ है। जब हम अपने घर सच्चखंड की तरफ रूख करते हैं तो हमारा हृदय कमल कुदरती तौर पर ऊपर की तरफ हो जाता है तब हमारी आत्मा को वह अमृत मिल जाता है उस अमृत को पहले ये पांचो जानी दुश्मन पी रहे थे।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''हम इस तन के लिए खुराक को जितना जरूरी समझते हैं हमारी आत्मा को उससे ज्यादा खुराक

की जरूरत है क्योंकि हमारी आत्मा जन्म-जन्म से भूखी है। आप जब तक आत्मा को खुराक न दे लें तब तक शरीर को खुराक न दें।'' आप यह भी कहा करते थे कि सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं और हजार काम छोड़कर भजन-अभ्यास में बैठ जाएं।

ठगों ने हमारे अंदर जाल बिछा रखा है अगर हम काम से छुटकारा पाने की सोचते हैं तो क्रोध पीछे पड़ जाता है, क्रोध से छुटकारा पाने की सोचते हैं तो हमें लालच आकर घेर लेता है। कबीर साहब कहते हैंः

कामी क्रोधी लालची इनसे भक्ति न होए।
भक्ति करे कोई सूरमा जाति वर्ण कुल खोए।।

इन पाँच ठगों के बस हुआ आदमी शान्त और तृप्त नहीं रह सकता। आपको पता है क्रोधी आदमी किसी का ख्याल नहीं करता उसके मुँह में जो आता है वह बोल देता है, यह नहीं सोचता कि यही लफ्ज कोई मुझे कहे तो मुझे कितना दुख होगा लेकिन जब हम आत्मा को 'शब्द-नाम' का रस देते हैं तब इन ठगों से हमारा बचाव हो जाता है; हमारे अंदर 'शब्द-नाम' का राज्य हो जाता है।

हुजूर महाराज बताया करते थे, ''ये पाँचों जानी दुश्मन हमें ठग रहे होते हैं। काम बुरी बीमारियां लगा देता है, कामी आदमी नाम की कमाई कर ही नहीं सकता क्योंकि काम की वजह से आत्मा नीचे अज्ञानता के खड्डे में गिर जाती है।''

यही हालत क्रोध की है, क्रोधी का खून जल जाता है। क्रोधी को कई तरह की बीमारियां ब्लड-प्रेशर वगैरहा हो जाता है। क्रोधी आदमी किसी डाक्टर या महात्मा की सलाह लेकर देखे तो वे बताएंगे कि क्रोध से आपका कितना नुकसान हो रहा है, आपके

ऊपर कितना बुरा असर पड़ रहा है। इसलिए महात्मा प्यार से कहते हैं कि हमें क्रोध से भी बचना चाहिए।

जब हम काम, क्रोध से बचते हैं तो लोभ घेर लेता है। लोभ बहुत ही चरित्र भरे बहाने बनाता है। कभी हुकूमत का नशा चढ़ता है तो कभी धन-दौलत कमाने के लिए प्रेरित करता है। आखिर लोभ हमें अज्ञानता के खड्डे में गिराकर एक तरफ हो जाता है। इन खड्डो में गिरा हुआ इंसान सारी जिंदगी बाहर नहीं निकल सकता।

महात्मा कहते हैं अगर हमें ऐसा सतगुरु मिले जो हमें नाम की खड़ग दे जिससे हम इन पाँच डाकुओं से मुकाबला कर सकें। सतगुरु जब 'शब्द-नाम' देते हैं तो वे हमें शब्द धुन के साथ लेस कर देते हैं। हमारा जिंदगी भर ऐसे हठीले दुश्मन के साथ मुकाबला होता है जो कभी हार नहीं मानता। तुलसी साहब कहते हैंः

तुलसी रण में जूझना एक का घड़ी काम।
नित उठ मन से जूझना बिन खंडे संग्राम।।

रणभूमि में लड़ना थोड़ी देर का काम है। खुद मर जाता है या दूसरे को मार देता है, फतह अपने हाथ लग गई या दूसरे के हाथ लग गई लेकिन यह रोज का संग्राम है। सतगुरु ने हमें 'शब्द-नाम' का हथियार दिया है अगर हम संघर्ष करें तो जीत जाते हैं तब सतगुरु हमें परमपद का ईनाम देता है। सतगुरु बेइंसाफ नहीं वह हमें ईनाम देने के लिए तैयार है। हम भी अपना ध्यान उस तरफ लगाएं अपने संघर्ष को जारी रखें।

हमें ये पाँचो ठग परेशान कर रहे हैं, इन ठगों से बचने के लिए सतगुरु की शरण में जाना जरूरी है। सतगुरु ने ये ठग अपने काबू में किए होते हैं और वे हम पर दया करके हमें भी 'शब्द-

नाम' का दान बख्शते हैं अगर हम सतगुरु के बताए रास्ते पर चलते हैं तो हम भी जीते जी इन ठगों पर काबू पा लेते हैं। यह बहुत सोच-विचार करने वाली बात है कि हम कामयाब क्यों नहीं होते? कबीर साहब कहते हैं:

जैसी लौ पहले लगी, तैसी निबहे ओड़।
अपनी देह की क्या गत, तारे पुरुष करोड़।।

हमारे दिल में नाम लेने का शौक होता है विरह-तड़प होती है। शुरू-शुरू में हम अभ्यास में अच्छा समय देते हैं तरक्की करते हैं और बताते भी हैं कि अब हमारे अंदर बहुत सारा प्रकाश है लेकिन धीरे-धीरे मन हमारे अंदर रूचि घटाना शुरू कर देता है। हम भजन-अभ्यास और गुरु के साथ प्यार कम कर लेते हैं। भजन-अभ्यास पर बैठना उतना जरूरी नहीं समझते जितना शुरू में समझते थे। जैसा प्यार पहले लगा है अगर वैसा ही प्यार आखिर तक निभ जाए तो अपना तरना तो क्या ऐसा इंसान करोड़ो पुरुषों का उद्धार कर जाता है। आपके आगे स्वामी जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है। यह शब्द गौर से सुनने वाला है:

मुसाफिर रहना तुम होशियार, ठगों ने आन बिछाया जाल।।

हम सारा दिन यही कहते हैं कि मेरी हाट-हवेली है, मेरे इतने बच्चे हैं, मैं इतनी जायदाद का मालिक हूँ; मैं इतने बड़े समाज वाला हूँ लेकिन सन्त-महात्मा हमें **मुसाफिर** कहकर बयान करते हैं। मुसाफिर उसे कहा जाता है जो रात को किसी जगह रूकता है और सुबह कूच कर जाता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

बटाऊ से जो लावे नेह, ताके हाथ न आवे खेह।

जो **मुसाफिर** से प्यार करेगा उसके हाथ क्या लगेगा? मुसाफिर ने सुबह बताकर भी नहीं जाना कि मैं कहाँ जा रहा हूँ इसी तरह

हम भी **मुसाफिर** हैं। पता नहीं कब मौत ने आ जाना है! पता नहीं कब आवाज पड़ जानी है! माता, बेटे को बताकर नहीं जाती और बेटा माता से सलाह नहीं करता कि मैं कहाँ जा रहा हूँ? हम मियाँ-बीवी के प्यार को बहुत ऊँचा समझते हैं। यह सारी जिंदगी साथ देने वाला होता है लेकिन मियाँ-बीवी भी बैठकर सलाह नहीं करते कि कहाँ जाना है कब जाना है?

महात्मा कहते हैं, ''हम यह नहीं समझते कि हम **मुसाफिर** हैं। आप होशियार होकर सोचें कि यहाँ ठगों ने जाल बिछाया हुआ है; कौन सी चीज आपकी है?''

मौहम्मद साहब के बहुत से शार्गिद थे। मौहम्मद साहब के दिल में ख्याल आया कि ये मेरे बाद झगड़ा न करें। इनमें से कौन ऐसा है जिसने मेरी तालीम को समझा है? आमतौर पर ऐसे कम ही लोग मिलेंगे जो सन्तों की तालीम को समझ सके या उनके कहे मुताबिक अपना जीवन ढ़ाल सके।

मौहम्मद साहब ने अपने सारे शिष्यों को धूप में खड़ा करके पूछा कि तुम्हारा क्या सामान है? हजरत उमर अपने आपको मौहम्मद साहब के काफी नजदीक समझता था कि मैं ही सारा कारोबार करता हूँ। मुझे इतने लोग जानते हैं। वह अपना सामान गिनवाने लगा कि मेरे इतने ऊँट हैं, मेरी इतनी जायदाद है, मेरी इतनी हाट-हवेली है; उसने गिनते हुए एक घंटा लगा दिया।

हजरत अली, मौहम्मद साहब के अंदरूनी राज़ का वाकिफ था। बाद में हजरत अली ही मौहम्मद साहब की गद्दी का वारिस बना। वह उठकर खड़ा हुआ और बोला, ''एक खुदा है जिसे नहीं देखा, दूसरा तू है जिसे मैं देख रहा हूँ। मेरे लिए राम-रहीम, खुदा-

अल्लाह ताला सब तू ही है।'' मौहम्मद साहब ने अपनी संगत को इशारे से ही समझा दिया कि जिनका गुरु के साथ प्यार होता है वे गुरु से अलग किसी चीज को अपना नहीं समझते।

कल्ला आया हैं कल्ला जाएंगा, दूजा गुरु है अगर ध्याएगा।

कबीर साहब कहते हैं, ''मुट्ठी भींचकर जन्म लिया था, मुट्ठी खोलकर चले जाना है। जिसने हमें नाम-शब्द का भेद दिया है वही हमारे साथ जाएगा लेकिन उसके साथ हमारा प्यार मौहब्बत नहीं।''

मैं आपको 24 पी.एस. का वाक्या बताया करता हूँ कि वहाँ की एक बूढ़ी औरत महाराज सावन सिंह जी की नामलेवा थी। उसका सारा परिवार मीट-शराब खाता-पीता था। वह बूढ़ी औरत हर रोज नियम से प्रेम-प्यार से भजन-अभ्यास करती रही। जब उसका आखिरी वक्त आया तो उसके बेटे और पोत्रे कहने लगे कि तेरी बेटियों को बुलवा लें। आमतौर पर औरतों का ख्याल अपनी बेटियों की तरफ होता है। मौत किसी को इतना समय नहीं देती कि तू बेटे-बेटियों को बुला ले। वह मौत ही क्या जो इतना समय दे दे। जब मौत की चिट्ठी आती है तो किसी को बुलाने का भी मौका नहीं देती।

जब वह माता जीवित थी तो उसके बच्चे उसका आदर नहीं करते थे। उन्हें यह भी पता नहीं था कि इसे किसी महात्मा से नाम मिला है या इसका गुरु इतना शक्तिशाली है। उस बूढ़ी औरत ने कहा कि मेरा गुरु मेरे पास खड़ा है उसके सफेद कपड़े हैं, सफेद दाढ़ी है। जब वह चोला छोड़ गई तो उसके परिवार पर बहुत अच्छा असर हुआ। सारे परिवार के लोगों ने नाम लिया और शाकाहारी जीवन व्यतीत करने लगे। बेशक उस बूढ़ी औरत के जाने के बाद परिवार पर रंग चढ़ा लेकिन वह भरोसे से शब्द-नाम की कमाई करती थी तभी उसका गुरु उसके पास आया।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्त सतसंगी की कुल का उद्धार कर देते हैं। ऐसे अनेकों ही वाक्य हैं कि गुरु आता है और साथ ले जाता है। गुरु उन्हीं को लेकर जाता है जिनका प्यार, ख्याल गुरु के साथ होता है।''

अगर हम आखिरी वक्त में कहें की बेटे-बेटियों को बुलाओ तो बेटे-बेटियों ने मदद नहीं करनी वे आपके पास आकर क्या करेंगे? महात्मा प्यार से समझाते हैं कि जिंदगी भर के सतसंग और भजन-अभ्यास का मकसद यह है कि हमारा ख्याल बना रहे। आखिरी वक्त हमारा ख्याल इसी तरफ हो।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''तराजु का जो पलड़ा भारी है वही झुकेगा, जिधर हमारा प्यार है हमें वही याद आएंगे; हम उनके पास ही जाएंगे।''

महात्मा के समझाने का मतलब काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ये सभी ठग अपना काम करके हमें यहीं छोड़ जाते हैं। हम जितना काम की आग में गिरते हैं उतनी ही हमारी सेहत खराब होती है। क्रोध के बस होकर बुरी-बुरी बीमारियों से ग्रस्त हो जाते हैं। लोभ के बस होकर ठग्गियां-बेईमानियां करने लग जाते हैं अपने उसूल छोड़ देते हैं, पैसे जोड़ लेते हैं। ऐसा पैसा डाक्टर की फीस या किसी बुरी तरफ लग जाएगा या उस धन से ऐशो-ईशरत का सामान बना जाएंगे या हमारा कोई बेटा उस धन को बर्बाद कर देगा। माया ढ़लती परछाई है जैसे सुबह छाया एक तरफ होती है तो शाम को दूसरी तरफ हो जाती है।

महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि आप यहाँ ठगों के देश में आए हैं, परमात्मा ने आपको इस जीवन में जो वक्त दिया है

इसमें आप होशियार होकर रहें। हम सबका आपस में मतलब का प्यार है। बहन-भाई का प्यार और औरत-मर्द का प्यार मतलब का है। जब हम गरीब हो जाते हैं तो कोई हमें अपना कहकर खुश नहीं होता अगर हमारे पास धन-दौलत है तो फट से रिश्तेदारी बना लेते हैं। कहते हैं कि यह हमारा है, चाहे वह हमारी कुल में से भी न हो। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जगत में झूठी देखी प्रीत।
अपने ही हित स्यों सब लागे, क्या दारा क्या मीत।।
मेरो मेरो सबहो कहत है, हित स्यों बांध्यो चीत।
अंत काल संगी नह कोई, यह अचरज है रीत।।

सब मतलब का प्यार करते हैं। जब मतलब हल हो जाता है तो कौन किसको पूछता है? रिश्तेदारियों में कई बार ऐसा समय भी आ जाता है तब हम कहते हैं कि इसने मेरे साथ ऐसा किया लेकिन फिर हमारा मन कौन सा इनसे दूर जाता है? फिर कहते हैं अपना अपना ही होता है लेकिन जो हमारा अपना परमात्मा है उसे हम अपना नहीं बनाते, दुनिया को अपना बनाने में लगे हुए हैं। दुनिया आज तक न किसी की बनी है न बन ही सकती है।

महात्मा हमें बताते हैं कि धरती एक वेश्या की तरह है। जैसे वेश्या के पास अनेकों ही आते हैं लेकिन वेश्या किसी के साथ प्यार नहीं करती। लोग वेश्या के पास अपना धन-दौलत फैंककर अपने धर्म से गिरकर चले जाते हैं। यही हालत धरती की है कि कई आकर इस पर उलटी कर गए हैं और अनेकों ही इसके मालिक बने हैं। पता नहीं और कितनों ने आकर इस धरती का मालिक बनना है। दुनिया यहाँ से चली जाती है लेकिन यह धरती यहाँ पर ही है। बुल्लेशाह कहते हैं:

बुल्लेया साड़ा ओत्थे वासा, जित्थे बहुते अन्ने।
न साड़ी कोई कद्र पछाणें, न सानूं कोई मन्ने।।

हम अंधों और ठगों की नगरी में आए है। यहाँ किसी को किसी की कद्र नहीं, न ही कोई किसी का आदर-सत्कार करता है अगर आदर-सत्कार करता भी है तो अपने मतलब के लिए करता है। जब मतलब हल हो जाता है तो कौन किसको पूछता है?

अकेले मत जाना इस राह, गुरु बिन न होगा निर्वाह।।

अगर हम दुनिया में भी किसी जगह सफर करते हैं तो पहले तैयारी कर लेते हैं कि हमने यहाँ से कश्मीर, दिल्ली या कलकत्ता जाना है। हम सब कुछ सोचते हैं कि हमने किस रास्ते से जाना है, रास्ते में कौन से स्टेशन आएंगे, खाने का क्या इंतजाम होगा? एक ऐसा भी सफर हमारी आँखों के सामने आना है जिस सफर ने टलना नहीं, क्या हमने कभी उस सफर के बारे में सोचा है कि वह सफर कितना गहरा और लम्बा है, वहाँ किस खर्चे की जरूरत है? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जहं मार्ग के गने जाए ने कोसा, हरि का नाम ऊँहा संग तोसा।

नाम के बिना कोई वस्तु साथ नहीं जाती। क्या नाम का तोशा भी इकट्ठा किया है? तू अकेला उस रास्ते पर जाएगा वहाँ ठग बैठे हैं। अंदर काल ने बहुत धोखे की जगह रची हुई हैं तुझे पता नहीं कि मैंने कहाँ जाना है? किसी वाकिफकार को साथ ले ले।

अगर किसी ने अमेरिका जाना हो तो वह वहाँ की जानकारी लेगा अगर कोई आदमी अमेरिका से आया हो तो हमें उसकी सोहबत-संगत से फायदा उठाना चाहिए। वह हमारे लिए फायदेमंद

रहेगा क्योंकि उसे पता है कि जहाज ने किधर से जाना है अमेरिका में किस जगह से दाखिल होना है।

इसी तरह सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे सच्चखंड से आते हैं वे सारे रास्तों से वाकिफकार होते हैं अगर हम अपने आपको उनके सुपुर्द कर दें तो हम बिना किसी खतरे के वहाँ पहुँच सकते हैं। गुरु के बिना हमारा निर्वाह नहीं हो सकता, गुरु के बिना हमें कोई अंदर नहीं लेकर जा सकता।

जमा सब लेंगे तेरी छीन, करेंगे तुझको अपना दीन।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''तू यहाँ जो थोड़ी बहुत पुण्य-दान की पूंजी जमा करता है उसे रास्ते में काल छीन लेगा, तुझे अपना दास बना लेगा।''

गुरु नानक जी कहते हैं, ''आगे पहाड़ की चढ़ाई है सिर पर पुण्य और पापों का बोझ है। वहाँ हमें पुण्य छुड़ा नहीं सकते पापों ने तो छुड़ाना ही क्या है?'' ऐसा नहीं कि हमें पुण्यों का कोई फल नहीं मिलता। पुण्यों का बहुत कुछ मिलता है अगर आज हमारे हाथ में झाड़ू है तो हुकूमत की बागडोर मिल जाएगी अगर झोंपड़ी में बिस्तर है तो महल में आकर बिस्तर लगा लेंगे। आज लोहे की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं तो पुण्य का ईनाम सोने की जंजीरे मिल जाएंगी। बेड़ी आखिर बेड़ी है चाहे सोने की हो या लोहे की हो।

इसी तरह हम पुण्यों का ईनाम पाने के लिए स्वर्गों में जाते हैं वहाँ भी तन और मन है। जहाँ तन है वहाँ सुख कहाँ? जहाँ मन है वहाँ सुख कहाँ? मन की वजह से ही आज हम परेशान हैं। मौत-पैदाईश, विषय-विकारों के दुख स्वर्गों में भी है। आप कहानियां सुनते हैं कि स्वर्ग के राजा इन्द्र ने अपने काम की हवस को पूरा

करने के लिए गौतम ऋषि की स्त्री का सत भंग किया अगर उसमे काम की हवस न होती तो वह इतना बुरा कर्म क्यों करता? वहाँ भी तृप्ति नहीं शान्ति नहीं। शान्ति सच्चखंड में है।

कबीर साहब कहते हैं, ''जिस समय यह आत्मा पहाड़ की चढ़ाई चढ़ती है उस समय इसके ऊपर पुण्य-पापों का बोझ होता है। चढ़ाई चढ़ी नहीं जाती। काल या काल के प्यादे डंडे मारते हैं कि आगे चल। जब मार पड़ती है तो इसे प्यास लगती है उस वक्त आत्मा पानी माँगती है। काल के प्यादे कहते हैं अगर पानी लेना है तो कीमत चुकानी पड़ेगी।''

मुम्बई में भी कई बार पानी का संकट आ जाता है यहाँ भी पानी बिकता है। हमारा जातिय तजुर्बा हैं कि राजस्थान में भी कभी पानी का एक टीन एक रूपये का बिक जाता था। वह भी बीस-बीस मील दूर से जाकर लाना पड़ता था। इसी तरह सन्तों ने अंदर का जो हाल लिखा है वह भी गलत नहीं हो सकता।

सन्तन की सुण साची साखी जो बोलण सो पेखण आखी।

सन्त हमें डराने के लिए ऐसी बातें नहीं लिखकर गए, वे हमारे फायदे के लिए लिखकर गए हैं। जब आत्मा वहाँ यमों से पानी मांगती है तो मौत के प्यादे कहते हैं कि तू हमें अपना फलाना पुण्य दे तो हम तुझे पानी दे देते हैं। वहाँ यह आत्मा अपने पुण्य खत्म कर लेती है। उसके बाद इसे धर्मराज के सामने पेश करते हैं, धर्मराज हमारे कर्मों के अनुसार अगला जन्म दे देता है फिर जन्म लेकर दुख उठाते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

कबीरा गागर जल भरी, आज काल जाए है फूट।
गुर जिन चेतया आपणा, सो आध माझ लीजेंगे लूट।।

यह देह पानी की एक कच्ची गागर है थोड़ी सी ठोकर लगने पर टूट जाएगी अगर कोई गुरु नहीं बनाया तो धर्मराज के पास पहुँचने से पहले ही लूट लिए जाएंगे। आपको पता है कि पुलिसवाले चोर-डाकू को पीट पीटकर उसकी पूंजी पहले ही लूट लेते हैं। पुलिस वाले अदालत में जो कुछ कहलवाना चाहते हैं उससे कहलवा लेते हैं। अदालत में पहुँचने तक उसके पास कुछ नहीं बचता, अदालत सजा सुना देती है।

हमारी भी यही हालत है कि हमने पुण्य-दान की जो पूंजी इकट्ठी की होती है यमदूत उसे रास्ते में लूट लेंगे, तुझे अपने अधीन बना लेंगे। तुझसे जो कुछ कहलवाना चाहेंगे तू वही कहेगा; यही हालत इस आत्मा की होती है।

जब काजी रूकमदीन की मक्का में गुरु नानकदेव जी से गोष्ठी हुई, काजी रूकमदीन ने गुरु नानकदेव जी से पूछा, ''आप गुरु की बहुत तारीफ करते हैं कि गुरु के बिना कोई भी आत्मा परमात्मा की दरगाह में नहीं जा सकती। गुरु क्या करता है?'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''इस जीव ने जहाँ से गुजरना है वह नदी बहुत भयानक है। उस नदी को हिन्दु शास्त्रों में बेतरणी नदी कहकर बयान किया गया है। वह नदी पाक और रत की बह रही है वह बहुत गर्म है अगर कोई उसमें हाथ डाले तो हाथ जलने लगता है, दूर से ही सेक आता है।'' आप कहते हैं:

बे पीरा बे मुर्शिदा कोई न पूछे बात।

जिसका कोई मालिक नहीं वहाँ उसकी कोई बात नहीं पूछता। अगर हम अमेरिका जाएं वहाँ हमारा कोई भाई-बहन या रिश्तेदार है तो वह हवाई अड्डे पर हमारे स्वागत के लिए आएगा अगर कोई

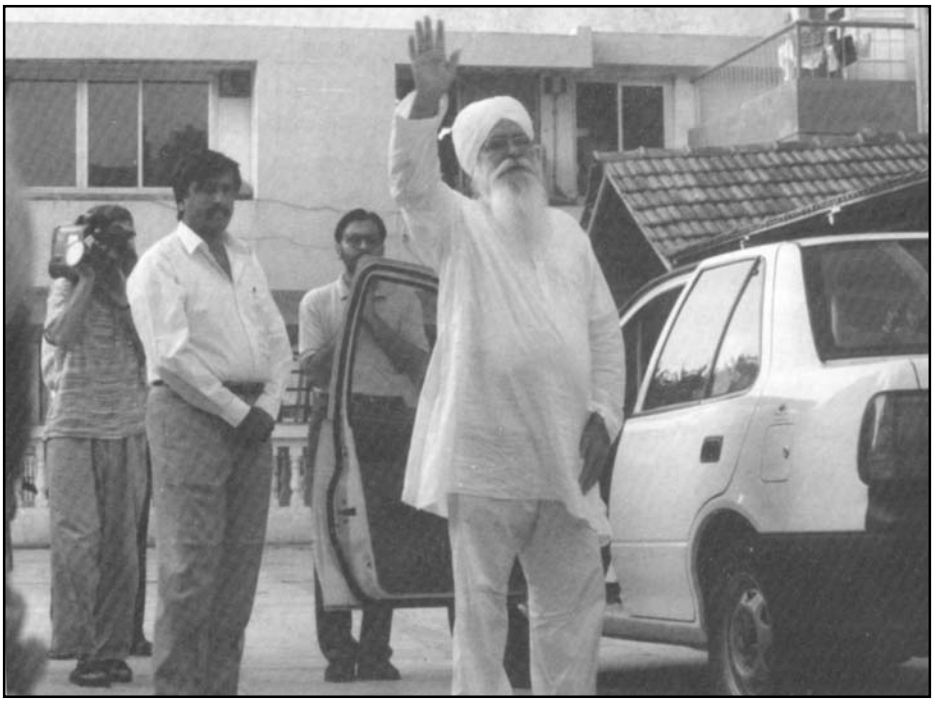

जान पहचान वाला नहीं तो बेचारा अकेला ही झोला हाथ में लिए चला आता है, उसे कौन पूछता है?

अगर उस मुल्क से कोई न लाने वाला सामान लाए तो हवाई अड्डे पर ही कस्टम वाले पकड़ लेते हैं, सजा देते हैं। हमारी भी यही हालत है जब हम धर्मराज की कचहरी में जाते हैं वहाँ भी नाम के बगैर सारी चीजों पर टैक्स लगता है। वहाँ सिर्फ नाम वाला ही छूट सकता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन नामें नहीं छूटस नानक सांची तरत उतारी।

नाम के बिना सच्ची दरगाह में कोई छूट नहीं सकता। परमात्मा ने सन्त-सतगुरु को नाम का भंडारी बनाकर भेजा होता है। सतगुरु संसार में आकर अपनी दात गरीब-अमीर सबको मुफ्त लुटाते हैं।

उस दात को चोर चुरा नहीं सकता। आग जला नहीं सकती। पानी गला नहीं सकता। वह दात हमेशा बढ़ती और फूलती है। जीव के साथ जाने वाली वही दात है।

सतगुरु नाम देते समय जीव के अंदर इस किस्म का इंतजाम कर देते हैं कि हम पीछे जो बुरे कर्म करके आए हैं उनका भी भुगतान होता रहता है और हम रोज तरक्की भी करते रहते हैं।

ठगो ने रोका सब संसार गुरु बिन पड़ गई सब पर धाड़।

आप कहते हैं, ''इन ठगों ने सारी दुनिया को गलत रास्ते पर डाला हुआ है। ये ठग किसी को पता ही नहीं लगने देते कि तेरा यह रास्ता है जिस तरफ सुख है। जिन्हें इंसानी जामें में पूरा गुरु नहीं मिला उसे ये ठग बीमारियों में फँसाकर चले जाते हैं। गुरु के बिना कोई रखवाला नहीं, गुरु के बिना कौन हमदर्दी है जो ये समझा दे कि ये ठग आपको अंदर से ही ठग रहे हैं?''

हमें पता है जब चोर डाकू आ जाते हैं तो वे घर में कोई पैसा टका नहीं छोड़ते। आजकल के जमाने में चोर सबको बाँधकर घर के अंदर फैंक जाते हैं।

मान लो कहना मेरा यार संग इन तजना पकड़ किनार।

सन्त-महात्मा हमें बड़े प्यार से समझाते हैं, ''इनकी दोस्ती छोड़कर गुरु के साथ प्यार करें; गुरु ही आपका सच्चा दोस्त, सच्चा रखवाला है।''

गुरु बिन और न कोई रखवाल कहूँ मैं तुझसे बारम्बार।

आप कहते हैं, ''दुनिया में कोई ऐसा है जो पराई आग में गिरे, पराए दुखों को अपने सिर पर ले! सिर्फ गुरु ही पराए दुःखों

को अपना दुख समझता है, सेवक की विपत्ता को अपनी विपत्ता समझता है।'' सेवक और गुरु के बीच ऐसे अनेको वाक्य होते रहते हैं कि सेवक गुरु के सामने खड़ा होकर कहता है और पत्रों में भी लिखता है कि आपने किस तरह मेरी संभाल की। यहाँ तक जिन परिवारों में माता-पिता को नाम नहीं मिला होता उनके बच्चे भी आकर कहते हैं कि आपने मेरी माता की, मेरे पिता की संभाल की। हमने खुद देखा है कि यह गुरु का खेल है, गुरु का प्यार है। गुरु तो सतसंगियों के बच्चों और पशु-पक्षियों तक को प्यार करते है और उनकी भी संभाल करते हैं।

होयगी मंजिल तेरी पार गुरु से कर ले दृढ़ कर प्यार।

प्रेम, श्रद्धा और भरोसा ये सन्तमत के अंग हैं। मकान की नींव मजबूत है तो मकान नहीं गिरेगा अगर हम प्रेम, श्रद्धा और भरोसा लेकर सन्तमत में कदम रखते हैं तो इसके अंदर भजन-अभ्यास सब कुछ ही आ जाता है। गुरु के ऊपर श्रद्धा है तो कितनी भी मुसीबत क्यों न आए हम हँसते-हँसते उस मुसीबत को सहन कर जाएंगे। अगर गुरु से प्यार है तो हम उसके दिए हुए नाम को जरूर जपेंगे। गुरु से प्यार है तो हमें गुरु का डर भी होगा हम उसके देखते हुए बुरे कर्म नहीं करेंगे।

इसलिए आप प्यार से समझाते हैं कि गुरु नाम देकर बेफिक्र नहीं होता। गुरु जीव को परमात्मा के आगे खड़ा करके कहता है, ''यह तेरा जीव है, भूल बख्शवाने आया है।'' उस दिन गुरु उस सेवक से बेफिक्र हो जाता है।

रोज-रोज का भजन-अभ्यास इस तरह है जैसे फल का पकना है। जब फल पक जाता है तो उस टहनी और फल को कोई दुख नहीं होता। जब हम ऊपर चले जाते हैं, उस परमात्मा शब्द को

अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं तो गुरु हमारी तरफ से बेफिक्र हो जाता है। उसे पता है कि इसने मेरी शिक्षा पर अमल किया है यही मेरा प्यारा पुत्र है।

गुरु के चरण पकड़ यह सार इन्द्री भोग भुलावत झाड़।
यही है ठगिया करत ठगार कहें राधा स्वामी तोहे पुकार।
शरण में आ जा लेंऊ संभार, नाम संग होजा होत उद्धार।।

स्वामी जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में सन्तमत-गुरुमत को बहुत प्यार से समझाया है कि इंसानी जामा बहुत कीमती है। इस जामें के अंदर परमात्मा ने अपना कीमती नाम - हीरा रखा हुआ है। हम उस नाम रूपी हीरे को किसी कमाई वाले महात्मा की शरण में बैठकर ही प्राप्त कर सकते हैं।

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे उस नाम रूपी हीरे को मुफ्त लुटाते हैं। इस हीरे को चोर चुरा नहीं सकते, ठग ठग्गी नहीं मार सकते; संसार से हमारे साथ जाने वाली यही वस्तु है। महात्मा ने हीरे के साथ तस्वीह देकर हमें समझाया है कि हीरे आखिर कीमती पत्थर होते हैं लेकिन नाम हीरों का भी हीरा होता है। वह जो कुछ है सो है हम उसकी महिमा बयान नहीं कर सकते।

आपने हमें प्यार से समझाया कि सतगुरु हमें 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ते हैं क्योंकि हमारे अंदर पाँच जानी दुश्मन हमारी आत्मा का घात करने पर तुले हुए हैं। आत्मा के लिए 'शब्द-नाम' अमृत है लेकिन इन पांच दुश्मनों के लिए 'शब्द-नाम' जहर का काम करता है। आप कहते हैं:

मन मूसा पिंगल भया पी पारा हर नाम।

जिस तरह चूहे को पकड़ने के लिए समझदार लोग उसे पारा पिला देते हैं वह जीवित तो रहता है पर किसी तरफ हिल-जुल नहीं सकता। इसी तरह अगर हम इन पांचों जानी दुश्मनों - काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार को 'शब्द-नाम' की लज्जत दे देते हैं तो ये बंध जाते हैं क्योंकि इससे ज्यादा और कोई लज्जत नहीं होती। 'शब्द-नाम' इनके लिए जहर का काम करता है और आत्मा के लिए अमृत का काम करता है।

हमें भी चाहिए कि गुरु को साथ लेकर अपनी मंजिल पर पहुँचें। गुरु का मिशन हमें ठगों से बचाकर ले जाना होता है। सन्त-सतगुरु कहते हैं, ''आप अपने-अपने समाज में रहें। अपने-अपने पहनावे पहनें। आपको जिस परमात्मा की तलाश है वह बाहर नहीं, वह चौबीस घंटे आपकी इंतजार में आपके अंदर बैठा है। परमात्मा आज तक बाहर से न किसी को मिला है न मिल ही सकता है।'' गुरु नानक साहब कहते हैंः

सब कुछ घर में कछु बाहर नाहीं, बाहर टोले सो भ्रम भुलाही।

आपको जिसकी खोज है आप जिससे मिलना चाहते हैं वह तो आपके शरीर के अंदर देह और वजूद में है। बाबा फरीद साहब अपने कलाम में लिखते हैंः

जंगल जंगल क्या ढूंढे, वन कंडा मोड़े, वसे रब हयालिया जंगल क्या ढूढें।

आप कहते हैं, ''तू क्यों काँटों पर पैर रखता फिरता है क्यों मारा मारा फिरता है? जिसकी तू तलाश कर रहा है वह तो तेरे अंदर बैठा है।'' हमें भी चाहिए सन्त-महात्माओं के कहे मुताबिक अपने जीवन को सफल बनाएं इस मौके से फायदा उठाएं।

***

DVD - 22

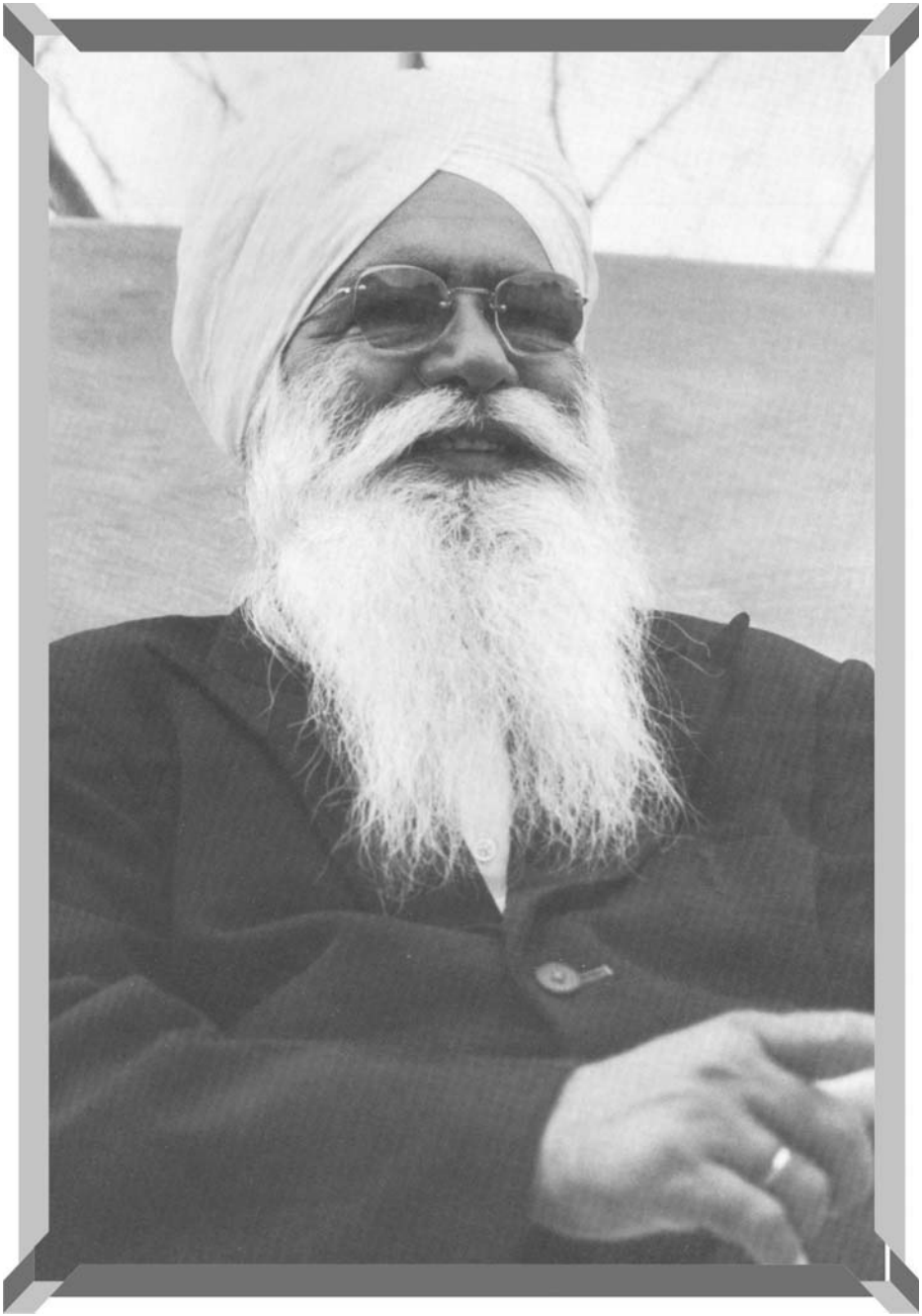

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

अनमोल वचन

जब भी सन्त-सतगुरु संसार में आए परमात्मा ने उन पर अपार दया की। सभी सन्तों ने खुले दिल से दया लुटाई। वर्तमान युग में ये महान हस्तियां सावन-कृपाल आए इन्होंने उस रूहानियत को ताले नहीं लगाए और खुले दिल से लुटाया। भाग्यशाली रूहानियत के चाहवान जीवों ने इन्हें बड़े दिल से लूटा।

मुझे सारी ही दुनियां में इनके सेवकों के नजदीक होने का मौका मिला है। यह सच है कि स्कूलों-कॉलजों में बहुत बच्चे जाते हैं लेकिन ऊँची क्लास पास करने वाले बच्चे बहुत कम होते हैं। ऐसे बच्चे पढ़ाई करते हैं और सच्चे दिल से अपने माता-पिता की कद्र करते हैं कि ये हमारे ऊपर धन खर्च करते हैं, हमारे लिए तकलीफ उठाते हैं। पढ़ाई के चोर पास नहीं होते। इसी तरह जो लोग ईमानदारी से सन्तों के बताए हुए नाम की कमाई करते हैं वे मालोमाल हो जाते हैं और उनके दिल में प्यार उमड़ पड़ता है।

महाभारत होने से पहले भी बहुत दुनिया थी। अर्जुन कृष्ण का खास मित्र था। एक दिन अर्जुन ने अपने प्यार की चर्चा की कि कृष्ण को मेरे जितना प्यार कोई नहीं करता। कृष्ण ने कहा कि अर्जुन! प्यार करने वाले बहुत हैं, किसी के पास जाने से ही पता लगता है।

आखिर कृष्ण अर्जुन को राजा मोरध्वज के पास ले गए। राजा मोरध्वज ने आपका आदर-सत्कार किया यह नहीं सोचा कि लोग क्या कहेंगे! राजा होकर साधु-सन्तों के चरणों में लगा फिरता है। कृष्ण ने कहा कि हमारे साथ जो शेर है, यह भूखा है लेकिन इसने यह शर्त रखी है अगर किसी का इकलौता बच्चा हो और माता-

पिता उसे लोगों के सामने चीरें तो ही यह उस बच्चे को खाकर अपनी भूख मिटाएगा लेकिन शर्त यह है कि माता-पिता रोएं न। वही दान लगता है जो खुशी से दिया जाए। राजा ने सोचा किसी का बच्चा मंगवा लेते हैं लेकिन शर्त सुनकर मुश्किल हुई।

रानी आलापात्र थी। रानी ने कहा कि भक्ति खंडे की धार होती है, हम भक्त हैं हमने भक्ति करनी है। यह तो भक्ति करवाने वाले की मर्जी है कि वह कैसे भक्ति करवाता है? राजा-रानी ने उफ्फ नहीं की और आरा मंगवा लिया। जब अपने पुत्र को चीरने लगे तो रानी की आँखों में से पानी गिरने लगा। भगवान ने कहा कि यह दान नहीं, रानी तो रो रही है। उन्होंने विनती की कि दान तो सच्चे दिल से किया जा रहा है लेकिन अभी बच्चा छोटा है जवान नहीं हुआ अगर पेड़ से कच्चा फल तोड़ा जाए तो तकलीफ होती है।

भगवान ने बच्चा तो क्या चिरवाना था, क्या शेर को खिलवाना था! यह कौतुक तो सिर्फ अर्जुन को समझाने के लिए किया गया था कि प्रेमी तो बहुत हैं। अर्जुन के दिल में ख्याल आया अगर यही सवाल मुझसे किया जाता तो क्या मैं इसे पूरा कर सकता था? अर्जुन ने अपने दिल को टटोला कि जब मेरा लड़का अभिमन्यु मारा गया था उस समय मेरे दिल पर क्या बीती थी? यह कोई मामूली बात नहीं, बहुत मुश्किल है।

मैं पश्चिम में बहुत से सच्चे-सुच्चे प्रेमियों से मिला हूँ। जिन्होंने किसी कुर्बानी की कोई परवाह नहीं की। आज वही लोग पहाड़ों की चोटियां में, समुद्रों की तहो में उत्साह से सावन-कृपाल के भजन बोलकर अपना जीवन सफल कर रहे हैं।

मैं कहा करता हूँ कि गुरु की बड़ाई उसका शिष्य ही सुन सकता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''नाम लेकर ही

इंसान सतसंगी नहीं बन जाता।'' हम सन्तों से नाम के पास पहुँचने का रास्ता ले लेते हैं। मैंने एक दिन सतसंग में बताया थाः

नाम रहे चौथे पद माहीं, तू ढूंढे त्रिलोकी माहीं।
तीन लोक में वसदा काल, चौथे में रहे पुरख दयाल।।

वही सतसंगी है जो मन इन्द्रियों के घाट से ऊपर उठकर आ गया है, उसका सच के साथ संपर्क हो गया है। उसने गुरु को प्रकट कर लिया है और उसके अंदर गुरु के प्यार की प्यास है। ऐसे सतसंगी के अंदर किसी के लिए घृणा नहीं होगी। गुरु का यश गाना ही उसका जीवन है। जहाँ उसके गुरु की बात नहीं होती वह उस सभा को धिक्कार समझता है। एक महात्मा कहता हैः

गल्ल न करण यार दी जित्थे ओह सभा दरकार नहीं।

मैं पश्चिम में गया हूँ। भजन पंजाबी भाषा में लिखे गए हैं। भजन बोलने के लिए पश्चिमी प्रेमियों को मजबूर होकर पंजाबी भाषा सीखनी पड़ी। वे लोग जोड़िया बनाकर दो-तीन घंटे बैठकर भजन गाते हैं क्योंकि उनके अंदर प्यार जाग गया है। उनके मुँह से कृपाल के नाम के बिना कोई भजन ही नहीं निकलता। आज भी सावन-कृपाल की ताकत हमारी मदद कर रही है। आज भी आपको ऐसे हजारों आदमी मिल जाएंगे जो यह गवाही देते हैं कि जब आप सतसंग कर रहे थे तो हमने सावन-कृपाल को देखा है।

अभी जब मैं वेनकुअर गया, वहाँ के बहुत से प्रेमियों ने कहा कि आपके सिर के ऊपर तीन बंदे खड़े हुए हैं। दो बंदो को तो हम पहचान रहे हैं लेकिन तीसरे बंदे को नहीं पहचान रहे, उसने सिर पर पगड़ी लपेटी हुई है और कोई खास कपड़े भी नहीं पहने हुए वह बंदा कौन है? मैंने कहा, ''वह बाबा बिशनदास जी हैं।''

सन्त-सतगुरु सच्चखंड पहुँचकर भूलते नहीं, वे आज भी मौजूद हैं। चाहे महाराज सावन को संसार से गए हुए कितना भी समय हो गया है लेकिन सतसंग करते हुए कई लोगों ने महाराज सावन और कृपाल की ज्योत को महसूस किया है। जब विरोधियों से यह पूछा गया कि ये दोनों ताकतें अजायब के सिर पर क्यों दिखती हैं? तो उन्होंने कहा कि यह कल्पना है। उनसे पूछा गया कि यह कल्पना आपके सिर पर क्यों नहीं दिखती?

महाराज सावन-कृपाल बहुत दयालु हैं। वे आज भी हमारे सब कारज करते हैं, हमारे अंग-संग हैं। वे हर सेवक के अंग-संग हैं लेकिन सेवक बनना बहुत मुश्किल है। परमात्मा कृपाल ने हमारे ऊपर बहुत दया की हमें दस दिन अपनी याद का मौका दिया। आज दुनिया में ख्याल फैले हुए हैं। आज का इंसान दस दिन तो क्या एक घंटा भी परमार्थ की तरफ नहीं लग सकता। यह तो हमारे ऊपर अपार दया हुई कि उसने हमें अपनी याद का मौका दिया। गुरु जिसे चाहे भुला सकता है जिसे चाहे अपनी याद में लगा सकता है यह गुरु के हाथ में है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

ज्यों बुलावे त्यों नानक दास बोले।

आप अपने गुरु से कहते हैं कि हममें ताकत नहीं, तू हमसे जो बुलवाता है हम वही बोलते हैं। यह समझ तभी आती है जब आँखें खुल जाती हैं कि कौन हमसे बुलवा रहा है? बहुत से आदमी सन्तों की नकल कर लेते हैं वे ऊपर के मंडलों की बातें इस संसार में ढ़ालते हैं। जब आप दसवें द्वार से ऊपर जाकर आत्मा से तीनों पर्दे उतार लेंगे फिर आपको पता लगेगा कि वह सब कुछ अपने आप ही करता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

करे कराए आपे आप।

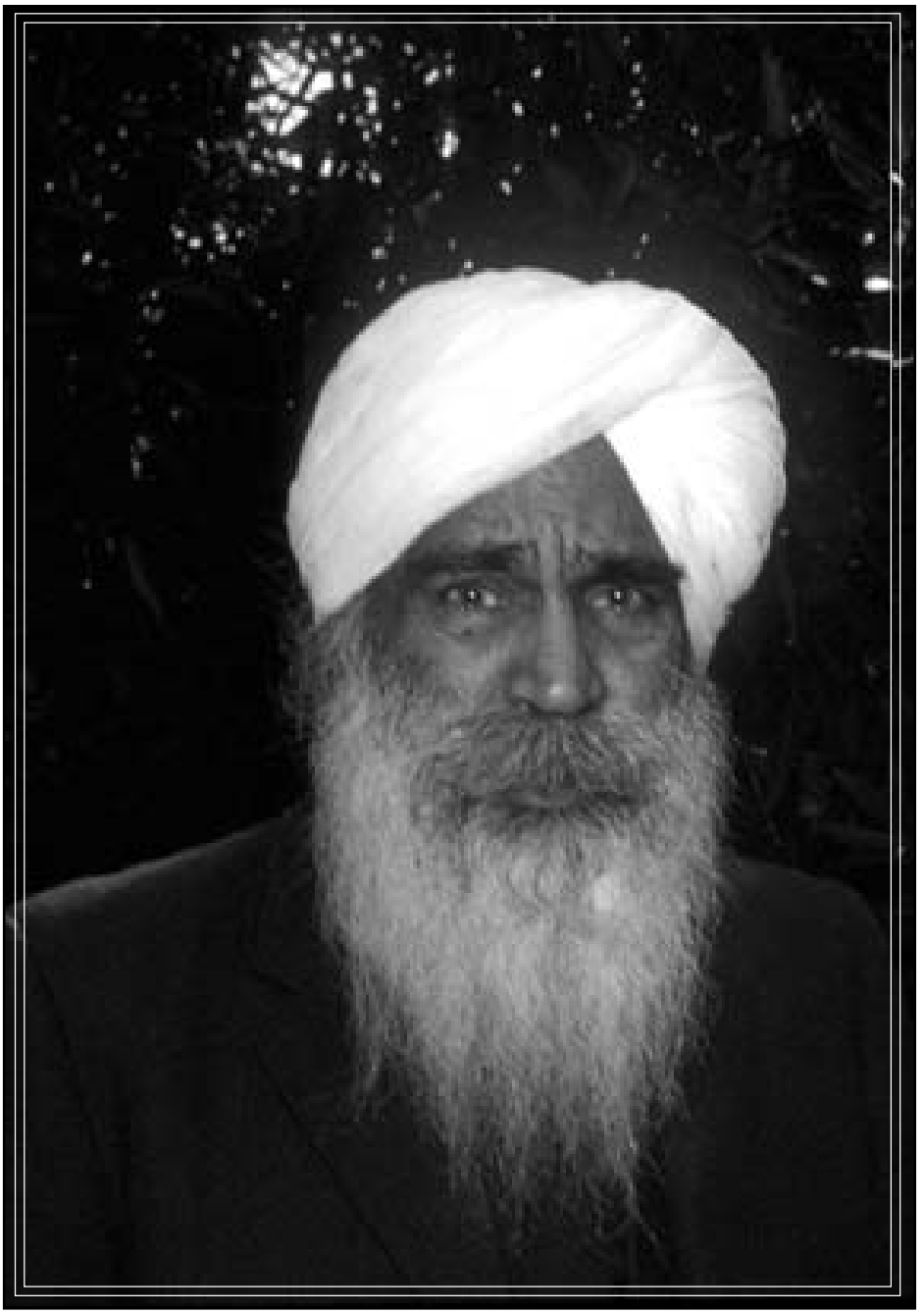

कोई अच्छी बात होती है तो हम कहते है कि यह हमने किया है, जब कुछ अपने बस से बाहर हो जाता है तो हम गुरु के ऊपर थोप देते हैं कि यह तो गुरु की मौज है, ऐसा नहीं होना चाहिए।

मैं आशा करता हूँ कि आप अपने घरों में पहुँचकर इस याद को ताजा रखेंगे और आपने यहाँ जो कुछ सुना है उस पर अमल करेंगे। मैंने ऊपर चौबारे में भी आपको बताया था कि आपने प्रेम-प्यार से सफर करना है किसी के साथ घृणा नहीं करनी। थोड़े समय की बात होती है। ट्रेनों में स्लीपर तो अब लगने शुरू हुए हैं। जिन दिनों में हम सफर करते थे उन दिनों में सारी रात बैठकर सफर करना पड़ता था।

सन्तों के अंदर हजारों माता-पिता जैसा दिल होता है। बच्चों को बिछोड़ना कोई छोटी बात नहीं बहुत मुश्किल होता है। जैसे आपकी आँखें भरी हुई हैं उसी तरह मेरा भी दिल भरा हुआ है। फर्क इतना है आप आँखों से आँसू निकाल लेते हैं लेकिन मैं किसके आगे आँसू निकालूं! आपको यहाँ से भेजने को मेरा दिल नहीं करता लेकिन फिर भी हम सबके जिम्मे लेन-देन करके कर्मों के जंजाल पड़े हुए हैं उनका भुगतान करना बहुत जरूरी है।

एक दफा महाराज सावन सिंह जी ने अपनी गृहस्थी जिंदगी छोड़कर बाबा जयमल सिंह जी के चरणों में रहने की विनती की थी। बाबा जयमल सिंह जी ने कहा, ''हम तुझे ऊपर नहीं ले जा सकेंगे क्योंकि देना-लेना फिर नीचे खींचकर ले आता है। तेरे ऊपर जो गृहस्थी जिंदगी की ड्यूटी लगी हुई है पहले उसे पूरा कर।''

इसलिए हमने दुनिया के बंधनों को भी पूरा करना है। यहाँ जो शब्द-नाम की कमाई सीखी है वह भी करनी है। हमारे ऊँचे

भाग्य थे कि हम परमात्मा के चुनाव में आए। गुरु और नाम उन्हीं आत्माओं को मिलता है जिनका परमात्मा ने सच्चखंड में फैसला किया होता है कि मैं इन्हें दुखी दुनिया में नहीं भेजूंगा। नाम बड़े ही कम लोगों के हिस्से में आता है। कोई भी इंसान धन-दौलत, बेटे-बेटियां, मान-बड़ाई पाकर, शादी करके या त्यागी बनकर सुखी नहीं, अपनी-अपनी जगह सब दुखी हैं। 'शब्द-नाम' की कमाई करने वाला ही सुखी है अगर कमाई करते हैं तो उस तरफ ख्याल लग जाता है। आत्मा शब्द का अमृत पीकर बलवान हो जाती है फिर हम दुखों-सुखों की परवाह नहीं करते।

मैंने जो कुछ थोड़ा सा बोला है कि आपने अपने घरों में जाकर रोज प्रेम-प्यार से भजन-सिमरन करना है; सतसंग में हाजिरी लगानी है। महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं, हजार काम छोड़कर भजन में बैठें। जितनी देर आत्मा को खुराक न दे लें तब तक तन को खुराक न दें।''

आत्मा जन्म-जन्मांतरों से भूखी है बिलख रही है। सबने अपना भजन-सिमरन करना है। सतसंगियों को एक परिवार की तरह रहना चाहिए। आपस में प्यार बनाकर रखना चाहिए ताकि पड़ोसी हमारी नकल करें कि इनको यह चीज कहाँ से मिली है।

मैं बताया करता हूँ कि कबीर साहब के एक पड़ोसी ने आपका यश देखा कि मैं तो कबीर साहब से धनी हूँ यह गरीब है। मेरे पास इज्जत करने वाले इतने लोग नहीं आते इसके पास बहुत लोग आते हैं; यहाँ तक कि राजा भी इसकी इज्जत करते हैं। कबीर के पास ऐसी कौन सी वस्तु है? उसने कबीर साहब से पूछा, ''आपके पास ऐसी कौन सी दवाई है जिससे लोग आपका सत्कार करते हैं। आपका गृहस्थी जीवन और काम काज भी ठीक चल रहा है।''

कबीर साहब उस दुनियादार बंदे को किस तरह समझाते क्योंकि उसे अंदरूनी चीज समझ आनी बहुत मुश्किल थी। कबीर साहब उसे अपने घर ले गए। कबीर साहब ने लोई से कहा, ''तू रोही के छप्पड़ से मिट्टी लेकर आ।'' लोई ने सतवचन कहा और मिट्टी लेने चली गई। मिट्टी लाकर लोई ने कबीर साहब से पूछा, ''इस मिट्टी का क्या करना है?'' आपने कहा कि इस मिट्टी को बारीक पीसकर घी में गूँथकर उसका दीपक बनाकर उस दीपक को जलाकर वहीं रखकर आ।

कबीर साहब ने जो कुछ कहा लोई ने सब कुछ किया और अपना सिमरन भी करती रही कि मुझे गुरु का हुक्म मिला है। लोई ने उसी तरह सारा काम करके हाथ जोड़कर कबीर साहब से कहा, ''अब बताएं मेरे लिए क्या हुक्म है?'' कबीर साहब ने कहा कि अब तुम अपना कारोबार करो, भजन-सिमरन करो। कबीर साहब ने उस आदमी से कहा कि हमारे पास यह चीज है। समझाने का मतलब हमारा आपस में अच्छा मेलजोल है और हम एक-दूसरे की बात मानते हैं।

पड़ोसी ने सोचा यह कौन सी बड़ी बात है। उसने घर जाकर अपनी पत्नी से कहा, ''तू रोही से जाकर मिट्टी ले आ।'' उसकी पत्नी ने कहा, ''तू सारा दिन कोई काम नहीं करता और मेरे ऊपर हुक्म चलाता है, खुद जाकर मिट्टी नहीं ला सकता।'' उसने कहा अगर तू मिट्टी नहीं लाएगी तो देख! मेरे पास डंडा रखा है। वह डर से मिट्टी लेने चली गई उसने सिमरन तो क्या करना था और मिट्टी लाकर कहने लगी, ''ले यह मिट्टी अपने सिर में मार ले।'' पड़ोसी ने फिर अपनी पत्नी से कहा, ''इस मिट्टी को बारीक पीसकर घी में गूँथकर उसका दीपक बनाकर उस दीपक को जलाकर

वहीं रखकर आ।'' उसकी पत्नी ने शोर मचा दिया कि मेरा पति बहुत अच्छा था इसे भूत चिपट गया है। लोग इकट्ठे हो गए। अब उस सज्जन ने शर्म के मारे अपने दाँत भींच लिए। लोगों ने सच समझ लिया कि वाक्य ही इसे भूत चिपट गया है और धूना देने वाले बंदे को बुला लिया।

जो कुछ हुआ उस बारे में कबीर साहब को पता था। कबीर साहब ने वहाँ जाकर कहा कि आप सब लोग बाहर चले जाएं यह मेरे बस का रोग है मैं इसे ठीक कर लूंगा। जब लोग बाहर चले गए तो कबीर साहब ने उससे कहा कि देख भाई! यही काम तो सबसे ज्यादा मुश्किल है। अब तू चुपचाप उठकर खड़ा हो जा नहीं तो ये लोग तुझे धूना देकर तेरे नाक में मिर्च देकर बंदे की बजाय और कुछ ही बना देंगे।

अगर परमात्मा दे तभी हम प्यार बना सकते हैं इसलिए हमने संगत में भी प्यार बनाकर रखना है। जो संगत में प्यार बनाकर रखेगा वह घर में भी प्यार बनाकर रख सकता है। आप सबने प्यार-मौहब्बत से अपना जीवन व्यतीत करना है अपने मन को शांत रखना है। मैंने आपको अभ्यास के बारे में जो दो-चार बातें बताई हैं उन पर भी अमल करना है।

सेवादारों ने दिल लगाकर सेवा की है। मैं उन सभी सेवादारों का धन्यवाद करता हूँ। किसी प्रेमी से सेवा करते हुए किसी पर कोई छींटा पड़ जाता है या गर्म लफ्ज बोला जाता है उससे अगर किसी के दिल को ठेस पहुँची हो तो मैं सेवादारों की तरफ से आप सबसे माफी मांगता हूँ। आशा करता हूँ आप लोग उन्हें माफ करेंगे, वे आगे आपकी बहुत अच्छे ढ़ग से सेवा कर सकेंगे।

31.08.85

***

धन्य अजायब

16 पी. एस. आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

28, 29 व 30 नवम्बर 2014

26, 27 व 28 दिसम्बर 2014

02 फरवरी से 06 फरवरी 2015

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रमः

7, 8, 9, 10 व 11 जनवरी 2015